RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

विदर्भ स्वाभिमान

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे | प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

अमरावती | गुरुवार दि.१८ से २४ जनवरी २०२४ | विशेषांक | वर्ष १४ | अंक ३० | पृष्ठ ८ | मूल्य १० रु. | पोस्टल रजि.नं. ATI/RNP/268/2021-2024

बाबूजी के आदर्श विचार

जीवन में ईमानदारी, नैतिकता, सच्चाई पर चलनेवाले व्यक्ति को तकलीफ हो सकती है. लेकिन उसकी प्रगति कभी भी बाधित नहीं होती है. सोना जिस प्रकार तपने के बाद निखरता है, सच्चे लोग इसी तरह मुसीबतों से भी सोना बनकर निकलते हैं.

रामोत्सव+दीपोत्सव =राष्ट्रोत्सव

कण-कण में राम जन-जन में राम त्रिभुवन स्वामी हैं श्रीराम

अयोध्यापति श्रीराम

जन जन के हृदय में बसे जननायक प्रजापति प्रभु श्रीराम

इस सप्ताह पूरा देश झूम रहा है. वैसे तो इस स्वर्णिम क्षण का इंतजार समूचे मानवता के नायक, आदर्श राजा श्रीराम की मूर्ति की उनके ही जन्मस्थान अयोध्या में स्थापना को लेकर न जाने कितने लोगों की कुर्बानियां, त्याग हैं और इस काम में जिस तरह से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्य योगीनाथ, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भूमिका निभाई और भारतीयों के लिए समूचे विश्व में गर्व रहने वाला यह पल लाया है, वह निश्चित ही सभी भारतीयों के लिए किसी गर्व से कम नहीं है. प्रभु श्रीराम का मंदिर उनके ही जन्मस्थान पर होना हर भारतीय के लिए और श्रीराम को मानने वाले के लिए गौरव से कम नहीं है. लेकिन इसके साथ ही प्रभु श्रीराम की महिमा ही इसे कही जाएगी जो लोग राम का नाम लेना भी पसंद नहीं करते थे, वे मंदिरों में पहुंचकर दर्शन कर रहे हैं और प्रभु का नाम लेकर उनका गुणगान कर रहे हैं. कहते हैं कि समय का चक्र फिरता है. धर्म से श्रद्धा, श्रद्धा से विश्वास और विश्वास ही ऐसी ताकत होती है जो असंभव को भी संभव कर देती है. प्रभु श्रीराम विष्णु के रूप में माने जाते हैं. लेकिन मानव देह में अवतार के बाद वे विश्व के पहले ऐसे चक्रवर्ती राजा हुए हैं, जिन्होंने हर भूमिका में सर्वोच्च आदर्श प्रस्थापित किया है. राजा कैसा होना चाहिए, इसका जहां परमोच्च हैं, वहीं आज भी लोग रामराज्य का उदाहरण देते हैं. कहते हैं कि रामराज्य में बाघ और छोटे जानवर निर्भय होकर एक ही घाट का पानी पीते थे. यह है प्रभु श्रीराम की महत्ता. उनके राज्य में न कोई दुखी था, न कोई दरिद्री थी, सभी समान थे और किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाता है. सभी के साथ न्याय होता था.

क़हते हैं धर्म और आचरण इन्सान को इन्सान ही नहीं बनाते हैं बल्कि आदर्श इन्सान बनाते हैं. प्रभु श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहा जाता है. आज देश में उनके मंदिर को लेकर जिस तरह से भक्तिभाव, आदर्श आचरण का विषय उठ रहा है, राजा कैसा होना चाहिए, १८ से लेकर श्रीराम लला मूर्ति की प्रतिष्ठापना तक देश में पूरा माहौल दीपोत्सव की तरह रामोत्सव में तब्दील दिखाई दे रहा है. प्रभु श्रीराम का आदर्श है कि उन्होंने शबरी के जूठे बेर खाते हुए पूरे संसार को यह संदेश दिया था कि भाव का महत्व रहता है. व्यक्ति अपने कर्मो से महान बनता है. कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं, इतना ही नहीं तो सभी को आदर्श इन्सान बनाने की सीख कई मौके पर दी है.

असली हकदार हैं मोदी

कुछ भी हो लेकिन सैकड़ों वर्षों से भारतीय अस्मिता दबी रखने से कोई भी इंकार नहीं कर सकता है. कहते हैं कि इतिहास को अधिक समय से नहीं छिपाया जा सकता है. आज सोशल मीि डय ा, ि ूग ला के दौर में सच्चाई पता लगाने में अधिक समय नहीं लगता है. सत्ता की ताकत ने इतिहास को किस तरह गलत दिशा देने का प्रयास किया है, इसकी सच्चाई जैसे-जैसे सामने आ रही है तो कईयों को लेकर जन-मन में नफरत वाली स्थिति पैदा हो रही है. धर्म और आस्था का विषय हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण रहता है. लेकिन इसके साथ ही उस धर्म को धर्म भी नहीं कहा जा सकता है, जो जोड़ने की बजाय तोड़ने को प्रोत्साहन दे, हर धर्म का सम्मान करने की सीख भी समस्त हिंदुस्तानियों को प्रभु श्रीराम के आचरण से लेनी चाहिए. विषय चाहे दुश्मन रावण के विद्वता के सम्मान का हो, केवट और सुग्रीव से मित्रता निभाने का हो, प्रभु श्रीराम ने समस्त मानव जाति के समक्ष हर रूप में आदर्श स्थापित किया है. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्य योगीनाथ, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के इस काम को आने वाले कई युगों तक याद किया जाता रहेगा.

धार्मिक पर्यटन पर जोर

श्रीराम मंदिर तो बन ही रहा है लेकिन जिस तरह से इसे बनाया गया है और प्रभु श्रीराम को विश्वस्तर पर प्रचारित किया जा रहा है उससे भारत में धार्मिक पर्यटन को नई दिशा मिलेगी और उत्तर प्रदेश के साथ ही देश की आर्थिक स्थिति को बूस्टर गति मिलेगी, यहां लाखों की संख्या में लोग देशभर तथा विश्व भर से जब आना शुरू होंगे तो निश्चित तौर पर रोजगार के असीमित साधन तैयार हों गे. केवल धर्म ही नहीं बल्कि भारत सरकार की इसे दूरंदेशी कहनी चाहिए कि इस मंदिर के माध्यम से हजारों लोगों को रोजगार के अवसर मिलें गे. अयोध्या तो विश्वभर में छा जाएगी और उत्तर प्रदेश के साथ ही समस्त भारत के विकास में इसका महत्तम योगदान भी होगा. कुल मिलाकर दीपोत्सव का यह नजारा समूचे विश्व को चकाचौं ध जहां करेगा, वहीं भारतीयों के लिए गौरव पुरूष, आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श पति सहित सभी भूमिकाओं में प्रभु श्रीराम के आदर्श का इतिहास समूचे विश्व में जाएगा, यह पल सभी भारतीयों के लिए गौरव का पल है, इसका आनंद लें और प्रभु श्रीराम के आदर्श विचारों पर चलते हुए परिवार, समाज, राज्य और राष्ट्र के लिए आदर्श युवा पीढ़ी का निर्माण करने का सभी प्रयास करें. प्रभु श्रीराम केवल भगवान नहीं बल्कि इन्सानियत को महिमामंडित करने वाले, संयुक्त परिवार को प्रोत्साहित करने वाले तथा जीवन में सदैव नेकी करने वाले आदर्श व्यक्तित्व हैं, आदर्श विचार हैं. श्रीरामचरित मानस जीवन दर्शन है. आज इसमें ऐसा कोई विषय नहीं है, जिसे गोस्वामी तुलसीदासजी ने छुआ नहीं है. रामराज्य का महत्व क्यों है, क्यों कर राजा जनता का पिता होता है, राजा को जनता को क्यों कर पुत्र मानना चाहिए, जिस तरह पिता अपने पुत्र की तकलीफ नहीं दे ख सकता है, उसी तरह राजा भी ऐसा होना चाहिए, जिसे पुत्र की तकलीफ कभी देखनी की नौबत नहीं आए. अयोध्या केवल एक धार्मिक विषय नहीं है,यह विषय है भारतीय पवित्र धरती पर पैदा हुए अवतारों का और उनकी सीख हैं. आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई के साथ मानवता के सर्वो च्च थे. आज यह विश्व में भारत के लिए गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्य योगी नाथ के प्रयासों से यह स्वर्णिम पल हम सभी भारतीयों के नसीब में आया है.

सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी अखबार विदर्भ स्वाभिमान का सदस्य बनने तथा विशेषांक के लिए संपर्क करें

– सम्पर्क –

9423426199, 8855019189

www.vidarbhswabhiman.com

विशेष सहयोग एवं साज सज्जा
संजय भोपाळे,
8806058697

विशेष सहयोग- जगदीश गुप्ता, सुदर्शन गांग, दिलीपभाई पोपट, चंदूलाल अग्रवाल, ज्ञानेश्वर धाने पाटील, राजेश दुबे, चंद्रकुमार जाजोदिया, अभिषेक पंजापी, पूरणसेठ हबलानी, डॉ.पंकज घुंडियाल, अरुणभाऊ पडोले, दुबे-त्रिपाठी मित्र परिवार.

सम्पादकीय

सचमुच आ जाये रामराज्य...

सचमुच भारत में हो रामराज की स्थापनाअयोध्या में जिस तरह से उत्साह ढ ाली स्थिति है और पूरे विश्व में जहां भी भारतीय रहते हैं, वहां श्रीराम के आगमन को लेकर अपार उत्साह वाली स्थिति है. रामराज्य कल्पना ही सर्वे भवन्तु सुखिनः पर आधारित है. अयोध्या में 22 जनवरी को श्रीराम लल की स्थापना के साथ ही जिस तरह से प्रभु श्रीराम विराजें गे, उसके साथ ही यह उम्मीद विदर्भ स्वाभिमान को है कि श्रीराम लला की मूर्ति स्थापना के साथ ही पूरे देश में रामराज्य की कल्पना को मूर्त रूप देने के साथ ही पूरे देश में रामराज्य हो. वह ऐसा हो, जैसी कल्पना श्रीरामचरितमानस में की गई है. इसमें रामराज्य में् सभी खुश रहते हैं, कोई गरीब, कोई दुखी तथा दरिद्री नहीं होता है. निर्भय होकर सभी जीवन जीते हैं, किसी को किसी से शिकायत नहीं होती है. सभी के साथ न्याय होता है. ऐसी ही कल्पना फिर से एक बार देश में साकार हो, यह उम्मीद की जानी चाहिए. वैश्विक स्तर पर रामराज्य की स्थापना की चाहत आज हर भारतीय की है. ग्राम स्वराज के रूप में रामराज्य की कल्पना की जा रही हैरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामराज्य पर पर्याप्त प्रकाश डाला है. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के सिंहासन पर आसीन होते ही सर्वत्र हर्ष व्याप्त हो गया, सारे भय□शोक दूर हो गए एवं दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से मुक्ति मिल गई. कोई भी अल्पमृत्यु, रोग□पीड़ा से ग्रस्त नहीं था, सभी स्वस्थ, बुद्धिमान, साक्षर, गुणज्ञ, ज्ञानी तथा कृतज्ञ थे. यह ऐसे गुण हैं कि इन गुणों के भरोसे धरती पर स्वर्ग उतारने की ताकत है. प्रभु श्रीराम जहां आदर्श, प्रजापालक, सभी की भावनाओं को समझने और सभी के साथ न्याय करने वाले राजा थे, वहीं उनके राज्य में सभी खुश थे. अकाल मौत किसी की नहीं होती थी.

राम राज बैठे त्रैलोका, हरषित भए गए सब सोका..
बयरु न कर काहू सन कोई, राम प्रताप विषमता खोई..
दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि ब्यापा..
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा, सब सुंदर सब बिरुज सरीरा..
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना..
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी, सब कृतग्य नहिं कपट सयानी..
राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं, काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं..

जिस तरह राज्य की कल्पना रामराज्य की है, यह सभी खूबियां जिस भी देश में साकार हो जाएं तो उस देश में निश्चित तौर पर हर सुख, सुविधा, खुशी स्वयं ही मिल जाएगा. वाल्मीकि रामायण में भरत जी रामराज्य के विलक्षण प्रभाव का उल्लेख करते हुए कहते हैं, 'राघव! आपके राज्य पर अभिषिक्त हुए एक मास से अधिक समय हो गया. तब से सभी लोग निरोग दिखाई देते हैं. बूढ़े प्राणियों के पास भी मृत्यु नहीं फटकती है. स्त्रियां बिना कष्ट के प्रसव करती हैं. सभी मनुष्यों के शरीर ह्यष्ट□पुष्ट दिखाई देते हैं. राजन! पुरवासियों में बड़ा हर्ष छा रहा है. मेघ अमृत के समान जल गिराते हुए समय पर वर्षा करते हैं. हवा ऐसी चलती है कि इसका स्पर्श शीतल एवं सुखद जान पड़ता है.इसी तरह का भारत फिर से एक बार बने और सर्वत्र खुशियां ही खुशियां हों, मर्यादा पुरूषोत्तम प्रभु श्रीराम के चरणों में यही कामना हम करते हैं. साथ ही हम गौरव के हकदार हैं, जिन्हें यह स्वर्णिम अवसर देखने का मौका मिल रहा है.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार) ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र).मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे, मार्केटिंग हेड श्वेता एस.दुबे (सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत) आर.एन.आई. रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881

मोबाइल नं.-09423426199/ 8855019189
E-Mail - vidarbh.swabhiman@gmail.com
www.vidarbhswabhiman.com

खुशहाली की ओर ले जानेवाला संकेत...

हम सभी सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें समूचे भारतीयों के प्राणपुरूष, आदर्श विचारों के महान राजा प्रभु श्रीराम लला की उनके जन्मस्था अयोध्या में मूर्ति स्थापना का मौका मिला है. राजनीतिक स्वार्थवश इस हमारे गौरव से वंचित रहे हैं. सवाल मंदिर का नहीं है, सवाल देश और देशवासियों की अस्मिता का था. दुनिया में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जहां संविधान ने जितनी छूट दी है, उतनी छूट किसी भी देश में नहीं है. ज्यादा दूर तो छोड़ दें, पड़ोसी पाकिस्तान में ही विचार व्यक्त करने की भी आजादी पूरी तरह से नहीं है. ऐसे में हमें सौभाग्यशाली मानना चाहिए कि हम भारत भूमि के बेटे हैं.आज भी प्रभु श्रीराम का जहां तक संबंध है तो आदर्श, मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में पूरा विश्व उन्हें जानता है. यही कारण है कि करोड़ों लोगों ने उन्हें मन मंदिर में बसाया है, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां श्रीराम ने अपने आदर्श आचरण का अनुभव नहीं कराया हो. धर्म के साथ ही जहां यह मंदिर देश का गौरव साबित होगा, वहीं इस मंदिर के माध्यम से विश्वभर के लोगों को भारत की आदर्श संस्कृति जानने का मौका मिलेगा. देश में आज आदर्श आचार-विचार और संस्कारों को बढ़ावा देने का काम जहां यह मंदिर करेगा, वहीं दूसरी ओर श्रीराम के आदर्श विचारों पर अमल के लिए भी प्रेरित होगा. संत-महात्माओं, आचार्यों के विचारों के साथ ही

राजेश दुबे
9218589028

हम अपने संस्कारों पर चलने के बाद भारत में पहले ही विश्व महागुरू बनने की क्षमता थी. जिस तरह से मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के आदर्श व्यक्तित्व को निहारा जाए तो व्यक्ति के मन में निश्चित तौर पर सद्भावना, सद्गुण के भाव पैदा होते हैं. प्रभु श्रीराम के व्यक्तित्व की महानता इससे बड़ी क्या हो सकती है कि रामायण पढ़ते समय भाई का प्रेम क्या होता है, इसका आदर्श भरत के रूप में देखा जा सकता है. आज जब मामूली दौलत को लेकर भाई-भाई का दुश्मन बन गया है, ऐसे में प्रभु श्रीराम का जीवन हर व्यक्ति अगर अपने आप में उतार ले तो धरती वैसे ही स्वर्ग बन जाएगा. अयोध्या एक प्रतीक होगी मानवता, रिश्तों के समर्पण, मानवता के सर्वो च्च, राजा के आदर्श रूप का दर्शन पूरे विश्व को कराने का. इतिहास गौरवान्वित होगाकहते हैं कि जिनका गौरवमयी इतिहास लोगों को याद नहीं रहता है, वे समय के साथ लुप्त हो जाते हैं. अयोध्या का गौरवमयी इतिहास लोगों में जाना जरूरी है. यह इतिहास हमारी आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देने के साथ ही भारत भूमि ही किस तरह पावन है कि यहां देवताओं का जन्म हुआ है. अयोध्या में श्रीराम मंदिर के कारण जिस तरह आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और अयोध्या, प्रदेश तथा राष्ट्र की प्रगति में योगदान देगी, इसका विचार भी किया जाना चाहिए. धर्म के साथ ही अर्थ को बड़ा योगदान देने में यह मंदिर कारगर होगा.

नाशिक का कालाराम मंदिर, जहां वनवास में रुके थे प्रभु श्रीराम

नासिक के कालाराम मन्दिर एक प्राचीन हिन्दू मन्दिर है, जिसमें भगवान राम की मूर्ति स्थापित है. यह मन्दिर महाराष्ट्र राज्य के नासिक ज़िले के पंचवटी के निकट स्थित है.मंदिर में विराजित राम की मूर्ति काले पाषाण से बनी हुई है, इसलिए इसे कालाराम कहा जाता है. यह मंदिर 74 मीटर लंबा और 32 मीटर चौड़ा है. इस मंदिर का ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व है. रामायण के प्राचीन महाकाव्य के मुताबिकि राम को चौदह वर्ष के वनवास में भेजा गया था. वनवास के दसवे साल के बाद राम,लक्ष्मण और सीता के साथ नासिक के पास गोदावरी के उत्तरी तट पर ढाई साल तक रहे थे. यह क्षेत्र पंचवटी के नाम से जाना जाता है. मंदिर के मुख्य द्वार पर हनुमानजी की मूर्ति है, यह काले रंग की है. यहां एक बहुत पुराना पेड़ भी है, जिसके एक पत्थर पर दत्तात्रेय के पदचिन्ह अंकित हैं. तीर्थयात्री कालाराम मंदिर के साथ ही कपालेश्वर महादेव मंदिर के दर्शन करते हैं. यह तीर्थक्षेत्र रहने के साथ ही जागृत मंदिर के रूप में भी सुख्यात है. राम के मुख्य मंदिर में 14 सीढ़ियां हैं, जो राम के 14 वर्ष के वनवास को दर्शाती हैं. मंदिर में 84 खंभे हैं, जो मानव जन्म पाने के लिए 84 लाख योनियों केचक्र का प्रतिनिधित्व करते हैं.मंदिर का निर्माण 1792 में किाय गया था. मंदिर का इतिहासपेशवा के सरदार रंगराव ओढ़ेकर द्वारा यह मंदिर 1782 में नागर शैली में निर्मित कराया गया था, जो लगभग 1788 ईस्वी में बन कर तैयार हुआ था. मंदिर में विराजित राम की मूर्ति काले पाषाण से बनी हुई है, इसलिए इसे 'कालाराम' कहा जाता है. यह मंदिर 74 मीटर लंबा और 32 मीटर चौड़ा है. मंदिर की चारों दिशाओं में चार दरवाजे हैं. महाद्वार से प्रवेश करने पर भव्य सभामंडप नजर आता है, जिसकी

ऊँचाई 12 फीट होने के साथ यहाँ चालीस खंभे है. यहाँ विराजमान हनुमान

सुदर्शन गांग
9422156523

मंदिर में वे अपने आराध्य राम के चरणों की ओर देखते हुए प्रतीत होते हैं. कहा जाता है कि ये मंदिर पर्णकुटी के स्थान पर बनाया गया है, जहाँ पूर्व में नाथपंथी साधु निवास करते थे. एक दिन साधुओं को अरुणा-वरुणा नदियों पर राम की मूर्ति प्राप्त हुई और उन्होंने इसे लकड़ी के मंदिर में विराजित किया था. तत्पश्चात माधवराव पेशवा की मातोश्री गोपिकाबाई की सूचना पर इस मंदिर का निर्माण करवाया गया. उस काल के दौरान मंदिर निर्माण में 23 लाख का खर्च अनुमानित बताया जाता है. यह मंदिर जहां स्वयं प्रभु श्रीराम से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरी ओर इस मंदिर का गौरवमयी इतिहास भी है. मंदिर का निर्माण काले पत्थरों से किया गया है. इसके चार प्रवेश द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर की है. कालाराम मंदिर की इमारत के चारो ओर एर चारदीवारी है, जिसमें 96 स्तंभ हैं. इस मंदिर में हर साल लाखों भक्त आकर दर्शन करते हैं. इतना ही नहीं तो प्रभु श्रीराम के चरणों से पुनीत होने के कारण इस मंदिर को लेकर भक्तों में अपार श्रद्धा है. नासिक मुंबई से 160 किमी तथा पुणे से 210 किमी दूरी पर स्थित है. मुंबई से नासिक हवाई मार्ग द्वारा भी पहुँचा जा सकता है. यह नासिक मध्य रेलवे का एक महत्वपूर्ण जंक्शन भी है. मुंबई की ओर जाने वाली अधिकतर गाड़ियाँ नासिक होते हुए गुजरती हैं. मुंबई-आगरा महामार्ग नासिक होते हुए गुजरता है.

मानवता के नायक प्रभु श्रीराम

युवा पीढी मानती है मर्यादा पुरुषोत्तम को आदर्श

प्रभु श्री रामचंद्रजी मानवता के सर्वो च्च नायक थे. उनका जन्म त्रेतायुग के अंत में हुआ था. रामजी परमपूज्य परमेश्वर विष्णुजी के अवतार माने जाते हैं. शबरी के झूठे बेर खाकर उन्होंने समूचे विश्व को मानवता, प्रेम से बड़ा कोई धर्म नहीं रहने का संदेश दिया था.- प्रभु रघु कुल के रघु नंदन थे दशरथ जी के बड़े बेटे और कोशल्या माता के पुत्र थे प्रभु की तीन माताएं कौशल्या, कैकेई, सुमित्रा थीं . रामजी सबसे बड़े थे और अयोध्या के राजकुमार एव राजा थे प्रभु के 4 भाई थे.लक्ष्मण, शत्रघ्न, भरत आगे चल के भरत से भारत का निर्माण नाम जोड़े दिया गए और महाभारत के पात्र भी भरत वंश के थे.और प्रभु ने जीवन का मोल लक्ष्य बताया मैत्री, अनुष्ठान, पुत्र,मर्यादा पुरुषोत्तम,प्रेम, आदर इत्यादि, सत्यवादी, चरित्रवान.और एक मां बेटा का फर्ज निभाया. शबरी मां भीलनी होने के बाद भी झूठे बेर खाते हुए प्रेम और भक्तिभाव की महत्ता प्रतिपादित की.

रोहित रमेश मेश्राम, अमरावती.

सर्वगुण सम्पन्न थे प्रभु श्रीराम

भगवान श्रीराम को श्रीहरि विष्णु का अवतार माना जाता हैं. धार्मिक ग्रंथों में उन्हें आदर्श पुरुष,आदर्श राजा,आदर्श पुत्र और मर्यादा पुरुषोत्तम बताया गया है. उन्होंने राजपाट छोड़ 14 साल वनवास में पिता के वचन को निभाने के लिए बिताया.फिर भी एक श्रेष्ठ राजा कहलाते हैं. क्योंकि उन्होंने सत्य, दया, करुणा, धर्म और मर्यादा के मार्ग पर चलते हुए राज किया.

तेजस सुभाष मुके, अमरावती.

श्रीराम को आचरण में उतारें

प्रभु श्रीराम ने मर्यादा, करुणा, दया, सत्य, सदाचार और धर्म के मार्ग पर चलते हुए राज किया. इस कारण उन्हें आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहा जाता है. भगवान राम सर्वगुण सम्पन्न मानवतावादी राजा रहे. उनके आदर्श को जीवन में उतारने पर सभी का जीवन सुखमय होता है. प्रभु श्रीराम के गुण हर व्यक्ति में जरूर होना चाहिए. भगवान श्रीराम में सहनशीलता और धैर्य की परकाष्ठा का विशेष गुण है.

ओम संजय हातगांवकर, अमरावती.

मर्यादा पुरुषोत्तम, जननायक, प्रजापालक राजा हैं श्रीराम

धर्म अध्यात्म के साथ देश की वित्तीय हालत मजबूती का केंद्र बनेगी अयोध्या नगरी, विश्वव्यापी मंदिर

समूचे देश के लिए है गौरव और गर्व वाला क्षणहम सभी भारतीयों के लिए यह अत्यधिक गौरव का विषय है जब हमारे आदर्श नायक मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम अपने जन्म स्थान अयोध्या में श्रीरामलला की मूर्ति की प्रतिस्थापना के साथ विराजमान होंगे. प्रभु श्री राम देवता के साथ मानवीय गुणों की खान हैं. जीवन भर उन्होंने जहां तमाम रिश्तों को पवित्रता की गहराई और समर्पण के चरम् तक पहुंचाया, वहीं दूसरी ओर प्रभु श्रीराम मर्यादा का कभी भंग नहीं होने दिया, यही कारण है कि उन्हें पूरा विश्व मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में जानता और मानता है. आज विश्व के करोड़ों दिलों में स्थापित हो चुके हैं. मर्यादा,न्याय,नीति, माता-पिता और गुरू का सम्मान किस तरह किया जाना चाहिए, इसका राम से बड़ा आदर्श दुनिया में कोई नहीं हो सकता है.राम का मतलब ही सत्य,धर्म, न्याय, नीति और आदर्श होता है.प्रभु श्रीराम ने आदर्श राजा के रूप में जो मापदंड स्थापित किया, वह विश्व के किसी भी कोने में प्राप्त नहीं हो सकता है.जितने आदर्श रिश्तों की स्थापना उन्होंने की,उतनी ही आदर्श विचार और संस्कारों को विश्व स्तर पर बढ़ावा दिया. प्रजातंत्र के सही मायने में उन्हें विश्व नायक कहना गलत नहीं होगा. जनता की आशा और आकांक्षा दोनों को रूप देने का कार्य जहां श्रीराम ने किया वहीं दूसरी ओर जनता किस तरह राजा की पुत्रवत होती है, इसका आदर्श उदाहरण समूचे विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया.प्रभु श्रीराम जहां भक्ति और शक्ति हैं वहीं दूसरी ओर ज्ञान,करुणा और कर्तव्य परायणता की पराकाष्ठा और सर्वोच्च हैं। आदर्श राजा के रूप में उन्होंने जहां सर्वोच्च त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया, वहीं संभव के नायक हैं.श्रीराम के जीवन और आदर्श की तुलना समूचे विश्व में कोई नहीं कर सकता है. यही कारण है कि प्रभु श्री राम समूचे विश्व के नायक हैं, आदर्श राजा कैसा होना चाहिए, इसका प्रतीक श्रीराम को माना जाता है.आज भी राम राज्य का जिक्र बार-बार आता है.राम राज्य का मतलब केवल आदर्श राजा नहीं बल्कि प्रजापालक राजा से होता है.आदर्श राजा का सर्वोच्चप्रभु श्रीराम को आदर्श लोकतंत्र का जनक कहना गलत नहीं होगा.इसका आदर्श उदाहरण एक व्यक्ति द्वारा मां सीता को लेकर टिप्पणी करने पर टिप्पणी करने पर उन्होंने अपने अलौकिक प्रेम और अपने सबसे प्रिय सीता को जंगल भेज दिया. तत्कालीन परिस्थितियों में राजा की कई महारानियां रहने के बाद भी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने एक पत्नी व्रत का सदैव पालन किया. नैतिकता का अगर कोई सर्वोच्च उदाहरण हो सकता है तो वह उदाहरण प्रभु श्रीराम के अलावा समूचे विश्व में कोई नहीं हो सकता. श्रम प्रतिष्ठा को उन्होंने सदैव सर्वाधिक महत्व दिया. सेवा भाव और आज्ञा पालन के साथ उनके राज्य में भाई-भाई में प्रेम था, भय-निर्भय-अभय का मूलमंत्र था. राम राज्य में जनता सुखी थी और किसी को किसी तरह का भय नहीं था. प्रभु श्रीराम आदर्श राजा के साथ ही शासन व्यवस्था में पारदर्शिता, कृतज्ञता, सौहार्द, स्वराज एवं सुशासन के साथ राज्य में सर्वे भवंतु सुखिनः को सदैव प्रोत्साहित किया. श्रीराम के आदर्श एक व्यक्ति के रूप में,एक राजा के रूप में,आदर्श भाई के रूप में,आदर्श पुत्र के रूप में, आदर्श शासक के रूप में सदैव पूजनीय रहे हैं. मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में उन्होंने समूचे विश्व के समक्ष जो आदर्श स्थापित किया है, उसकी बराबरी तो दूर प्रभु श्रीराम द्वारा स्थापित आदर्श तक पहुंचना भी किसी

सेवाव्रती सुदर्शन गांग
आनंद परिवार, बडनेरा

के लिए संभव नहीं है. आदर्श शासक,स्वधर्म पालन अहंकार मुक्त राजा, छल कपट मुक्त जीवन परोपकारी,परस्पर प्रेम तथा राजा के रूप में प्रभु श्रीराम ने राज्य के अंतिम व्यक्ति के उत्कर्ष का जो आदर्श सिद्धांत अपने समय में स्थापित किया,प्रभु श्रीराम के उस आदर्श की बराबरी समूचे विश्व में कोई राजा नहीं कर सकता है. अभी तक का तो ऐसा इतिहास नहीं दिखाई देता है. श्रीराम जहां सत्य और धर्म के सर्वोच्च थे, वहीं पारदर्शिता का राज्य में किस तरह महत्व होता है, इसका आदर्श भी स्थापित किया. उनका राज्य जनता का राज्य था और पारदर्शिता के मामले में आदर्श राजा के रूप में उन्होंने समूचे विश्व को यह बताने का प्रयास किया कि राजा जनता का सेवक होता है ना की मालिक.वर्तमान स्थिति में आदर्श राजा कैसा होना चाहिए, श्रीराम जैसा राजा रहने के बाद रामराज्य आने में विलंब नहीं होगा. इसका आदर्श सिद्धांत प्रभु श्रीराम ने अपने आचरण से साबित किया.काम करते समय नीति और सिद्धांतों का किस तरह पालन किया जाना चाहिए, इसका आदर्श श्रीराम ने स्थापित किया. वानर सेना के माध्यम से असुरों से उनकी लड़ाई और असुरों का संहार करते हुए धर्म की स्थापना की.उनका कार्य समूचे विश्व के लिए आदर्श रहेगा. उन्होंने जीवन में युद्ध को कभी बढ़ावा नहीं दिया, बल्कि चर्चा के माध्यम से समस्या का समाधान करने का अंतिम समय तक प्रयास किया. लेकिन जब बात नहीं बनी तो ईमानदारी, प्रयास को कोई कायरता नहीं समझे, अंतिम विकल्प के रूप में ही युद्ध का लक्ष्य बनाया. समस्याओं का समाधान बातचीत, संवाद से करने का संदेश दिया. निष्काम काम, निष्पक्ष सेवा सदाचार,करुणा, दया,क्षमा, सत्य,न्याय,सदाचार,साहस, संयम,धैर्य,आदर्श राजा सहित सभी रिश्तों में प्रभुश्री राम ने जो आदर्श स्थापित किया, उसकी बराबरी भी कोई नहीं कर सकता है. प्रभु श्रीराम के अयोध्या में अपने स्थान पर श्रीराम लला मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के रूप में विराजित होने पर समस्त श्रीराम भक्तों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

लंकेश कहकर राम ने किया था विभीषण का स्वागत

प्रभु श्री राम मर्यादा का कितना पालन करते थे और रघुकुल रीति के मुताबिक उनका वचन कितना गहरा अर्थ रखता था,इसका एक शानदार उदाहरण रामायण में मिलता है.अपने भाई रावण को विभीषण ने जब प्रभु से संधि करने की सलाह दी उस समय रावण ने विभीषण को लात मार कर अयोध्या से निकाल दिया.प्रभु के परम भक्त हनुमान जी जब विभीषण को लेकर प्रभु श्री राम के पास आए उस समय प्रभु श्री राम ने लंकेश कहकर विभीषण का स्वागत किया.प्रभु द्वारा लंकेश कहकर विभीषण का स्वागत करने के साथ प्रभु श्री राम ने जहांस्पष्ट कर दिया कि वह युद्ध में रावण को हराएंगे और श्रीलंका पर कब्जा करेंगे और रावण के बाद लंका के राजा के रूप में विभीषण को जिम्मेदारी सौंप देंगे.लंकेश कहकर एक साथ प्रभु ने भविष्य के सारे परिणाम जहां बता दिए वहीं दुश्मन के साथ भी किस तरह का व्यवहार किया जाना चाहिए,इसका आदर्श समूचे विश्व के समक्ष रखा.श्री रामचरितमानस में इसी तरह के कई ऐसे प्रसंग प्रभु श्री राम की आदर्श सिख से भरे हुए हैं.साक्षात विष्णु के अवतार रहने के बाद भी उन्होंने मानव के रूप में सभी रिश्तों को आदर्श स्थान जहां प्रदान किया,वहीं दूसरी ओर मानव मूल्य को गौरवान्वित करने का महान कार्य भी त्रिभुवन के स्वामी ने किया.आज भी व्यक्ति अगर राम जैसे बेटे की चाह रखता है तो श्री राम का सदैव मर्यादाओं का पालन करना महत्वपूर्ण कारण है.

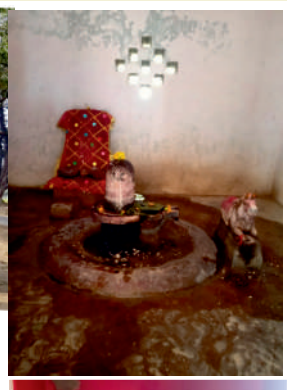

जागृत है धौरहरा का श्रीराम जानकी मंदिर

हजारों भक्तों को हुआ है अनुभव

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले की पट्टी तहसील के अंतर्गत आने वाले धौरहरा नामक छोटे से गांव में स्थापित श्रीराम जानकी का मंदिर भक्तों को प्रेरित करने के साथ ही सबसे जागृत मंदिर के रूप में आसपास पहचाना जाता है. मंदिर की स्थापना वर्ष 1965 में प्रभु श्रीराम के अनन्य भक्त स्वर्गीय हरिपाल मिश्रा ने की थी. इस मंदिर का फिलहाल संचालन हरपाल मिश्रा के नाती रमापति मिश्रा तथा परिवार द्वारा किया जा रहा है. हरिपाल मिश्रा कोलकाता में नौकरी करते थे.उन्हें प्रभु का साक्षात्कार होने के बाद नौकरी से सेवानिवृत होने के बाद वे गांव आए और उन्होंने श्रीराम जानकी मंदिर की स्थापना की पूरा गांव इस मंदिर में प्रभु श्रीराम माता जानकी लक्ष्मण के साथ ही श्रीराम दरबार वाले इस मंदिर में दर्शन कर अपने जीवन को धन्य करते थे. समय के साथ अब यह मंदिर भले ही पुराना हो गया है.लेकिन आज भी इस मंदिर में दर्शन करने वालों की मनोकामनाएं पूरी होने का कई उदाहरण गांव के लोग बताते हैं.

सुनील दुबे
8528473572 प्रतापगढ़

उत्तर प्रदेश का धौरहरा नामक गांव सामाजिक, धार्मिक और विकास कामों में भी सदैव अग्रणी रहता है. गांव के लोगों का प्रेम और सभी में आत्मीयता के कारण ही इस गांव में कभी अशांति की स्थिति पैदा नहीं हुई. गांववासी जहां भक्ति भाव से भरे रहते हैं वहीं दूसरी ओर गांव में कई वर्षों से होने वाली श्री रामलीला और प्रभु श्रीराम के जीवन चरित्र पर आयोजित नाटक के माध्यम से गांव के बच्चों और युवाओं को प्रभु श्रीराम के आदर्श संस्कारों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी जाती थी. आज भी गांव में सभी की एकता और देश के लिए समर्पण सदैव विख्यात है. गांव में जहां कई कथाकार हुए हैं वहीं गांव की युवा पीढ़ी ने भी कई उपलब्धियां हासिल की है. आचार्य वीरेंद्र पांडे,आदर्श शिक्षक के रूप में शिवप्रसाद दुबे,आचार्य पंडित ज्ञान प्रकाश दुबे,संगीत के क्षेत्र में अग्रणी और अमरावती के जय माता दी मानस मंडल के प्रमुख सत्यप्रकाश दुबे,फार्मेसी कंपनी में गुणवत्ता प्रबंधक के रूप में सेवारत राजेश दुबे के साथ बड़ी संख्या में युवाओं ने गांव से लेकर देशभर मेंअपनी अथक मेहनत और लगन से गांव का नाम चमकाया है.श्रीराम जानकी का मंदिर आज भी हजारों भक्तों के लिए आस्था का केंद्र है. इस मंदिर का प्रबंध स्वर्गीय हरिपाल मिश्रा के नाती रमापती मिश्रा परिवार जनों द्वारा किया जा रहा है.बचपन में मां के साथ जब कभी इस मंदिर में दर्शन के लिए जाता था तो अपार शांति का अनुभव इस मंदिर में होता था.रास्ते से गुजरने वाले राहगीरों के लिए मंदिर के सामने बेहतरीन कुएं का निर्माण किया गया था. इस मंदिर के कुएं के पानी की शीतलता और मिठास किसी को भी बिना प्रभावित किये नहीं रहती है. सरपंच सौ. विभा मिश्रा गांव के विकास के लिए प्रयासरत हैं. जबकि पति अंजुल मिश्र भी गांव के विकास के लिए तत्पर हैं.

अदभुत है रामटेक का राम मंदिर

चार महीने यहां प्रभु का रहा है निवास

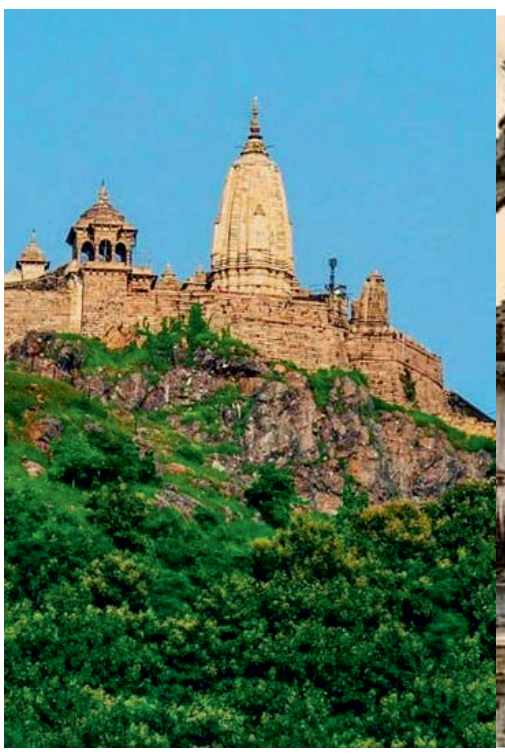

महाराष्ट्र के नागपुर से करीबन 40 किलोमीटर दूर स्थित रामटेक मंदिर प्रभु राम का अद्भुत मंदिर है। इस मंदिर को लेकर ऐसी कहानी है कि भगवान राम ने वनवास के दौरान इस स्थान पर चार महीने तक माता सीता और भगवान लक्ष्मण के साथ समय बिताया था। इसके अलावा माता सीता ने यहां पहली रसोई भी बनाई थी, उन्होंने खाना बनाने के बाद स्थानीय ऋषियों को भोजन कराया था। इस बात का वर्णन पद्मपुराण में भी किया गया है।राम नवमी के विशेष अवसर पर इस मंदिर के आसपास मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से लोग शामिल होने के लिए आते हैं। इसकी विशेषताओं की बात करें तो यह मन्दिर सिर्फ़ पत्थरों से बना है, जो एक दूसरे के ऊपर रखे हुए हैं। सैकड़ों वर्ष पुराना यह मंदिर जस का तस है, स्थानीय लोग इसके पीछे भगवान राम की कृपा बताते हैं। आइए जानते हैं इस मंदिर से जुड़ी कुछ ख़ास बातें।एक छोटी पहाड़ी पर बने रामटेक मंदिर को गढ़ मंदिर भी कहा जाता है। इसके अलावा इसे सिंदूर गिरि भी कहते हैं। यह देखने में मंदिर कम क़िला अधिक लगता है, विशेष बात है कि इसके पूरब की ओर सुरनदी बहती है। रामटेक मंदिर का निर्माण राजा रघु खोंले ने एक क़िले के रूप में करवाया था। मंदिर के परिसर में एक तालाब भी है, जिसे लेकर ऐसी मान्यताएं है कि इस तालाब में पानी कभी कम या ज़्यादा नहीं होगा। हमेशा सामान्य जल स्तर होने की वजह से लोग काफ़ी हैरान होते हैं। यही नहीं ऐसा माना जाता है कि जब भी बिजली चमकती है तो मंदिर के शिखर पर ज्योति प्रकाशित होती है, जिसमें भगवान राम का अक्स दिखाई देता है।रामटेक ही वह स्थान है, जहां भगवान राम और ऋषि अगत्स्य मिले थे। ऋषि अगत्स्य ने ना सिर्फ़ भगवान राम को शस्त्रों का ज्ञान दिया था बल्कि उन्हें ब्रह्मास्त्र भी प्रदान किया। जब श्रीराम ने इस स्थान पर हर जगह हड्डियों का ढेर देखा तो उन्होंने इस बारे में अगत्स्या से प्रश्न किया। तब उन्होंने बताया कि यह उन ऋषियों की हड्डियां हैं, जो यहां पूजा करते थे। यज्ञ और पूजा करते समय राक्षस विघ्नि डालते थे, जिसे जानने के बाद श्रीराम ने प्रतिज्ञा ली थी, कि वह उनका विनाश करेंगे। यही नहीं ऋषि अगत्स्य ने रावण के अत्याचारों के बारे में भी भगवान राम को यहीं बताया था। उनके दिए गए ब्रह्मास्त्र के ज़रिए ही भगवान राम रावण का वध कर पाए थे।रामटेक ही वह स्थान है, जहां पर महाकवि कालिदास ने महाकाव्य मेघदूत लिखी थी। इसलिए इस जगह को रामगिरि भी कहा जाता है, हालांकि कालांतर में इसका नाम रामटेक हो गया। वहीं त्रेता युग में रामटेक में सिर्फ़ एक पहाड़ हुआ करता था। आज के दौर में यह मंदिर भगवान राम के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यह ख़ूबसूरत जगह शहर के शोरगुल से अलग श्रद्धालुओं को सुकून प्रदान करती है।

हरिहरधाम हैं भक्तों का पावन स्थान श्री खोखरा हनुमान मंदिर

करोडों भक्तों का आस्था स्थल

पूज्य मां कनकेश्वरी हैं महामंडलेश्वर

गुजरात के मोरबी स्थिति श्री खोखरा हनुमान मंदिर जागृत देवस्थान है. यहां स्थित हनुमानजी की मूर्ति कितने साल पुरानी है, इसकी जानकारी किसी को नहीं है.वर्तमान महंत यहां की महामंडलेश्वर पूज्य मां कनकेश्वरी देवी विराजित हैं. उनके गुरू केशवानंद बापू की प्रतिमा भी यहां पर स्थित है. उन्होंने इस मंदिर में तप किया है. कहा जाता है कि बापू जब बीमार होते थे, बापू ने कभी कोई दवाई नहीं ली. उन्हें जब कोई बीमारी होती थी तो वे यहां आ जाते थे. यहां छोटा मंदिर और छोटी झोपड़ी थी, वे यहां दो-तीन दिन रूकते थे और ठीक हो जाते थे. बापू इन्हें वैद्य हनुमानजी बोलते थे. यहां पर लाखों लोगों को बीमारी से मुक्त होते देखा गया है. जहां श्रद्धा है, भाव है, वहां रास्ता है. गंभीर किस्म की बीमारियों से पीड़ितों को भी यहां पर आराम मिला है, यही कारण है कि लाखों की संख्या में भाविकों की श्रद्धा यहां से जुड़ी है. यह तपस्वी और जागृत मंदिर के रूप में न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में सुख्यात है. मंदिर परिसर में हनुमानजी की 108 फिट ऊंची मूर्ति भी प्रतिष्ठीत है. इस मूर्ति के बारे में बताया जाता है कि इस मूर्ति के निर्माण के समय 9 करोड़ राम नाम अंकित किया गया है. इससे हनुमानजी की शक्ती कई गुना बढ़ गई है. यहां आने वाले भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं. 131 फिट के करीब इसकी ऊंचाई है. मूर्ति की विशेषता यह है कि हजारों करोड़ राम नाम अंकित किया गया है. इस मंदिर की प्राचीनता का कोई इतिहास नहीं है. ना ही हनुमानजी की प्रतिमा का कोई इतिहास है. स्वामी केशवानंदजी ने यहां रहकर वर्षों तक तपस्या की थी. बाद में भक्तों को विस्तारित किया. केशवानंद बापू ने इस मंदिर की स्थापना की. केशवानंद बापू के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने 27 वर्षों तक एक पैर पर खड़े होकर तपस्या की थी. इसलिए आज भी यह पूर्णतः अखाड़े के अधीन है. पूजा-अर्चना से लेकर मंदिर का पूरा प्रशासन और प्रबंधन वर्तमान महामंडलेश्वर 1008 पूज्य कनकेश्वरी माता द्वारा किया जाता है. उनका जन्म गुजरात के मोरबी जिले में हुआ. एक बार पढ़ने और सुनने के बाद वे कोई भी श्लोक, कथा जस की तस पाठ कर लेती थी. बचपन से ही मां विलक्षण बुद्धिमत्ता की धनी थी और अध्यात्म की ओर उनका पूरा लगाव था. बचपन में ही उन्होंने भगवान शिव को अपना आराध्य बना लिया. भगवान शिव के दर्शन के लिए उन्हों ने 9 साल की उम्र में भगवान भोलेनाथ क़ी साधना शुरू की. उनकी अग्नि अखाड़े में स्वामी केशवानंद से मुलाकात हुई. पूज्य कनकेश्वरी मां कहती हैं कि उनसे मुलाकात के बाद उनकी जिनसे मुलाकात की चाहत थी, वह पूरी होने का अनुभव किया. स्वामी केशवानंद का शरीर शांत होने के बाद 2015 से पूजा तथा प्रबंधन की जिम्मेदारी उन पर आई और उन्होंने संभालना शुरू किया. उन्हों ने क्षेत्र को पूरी तरह से विकसित करने का कार्य शुरू किया. वे यहां की प्रथम माता स्वरूपा महामंडलेश्वर हैं. यह मंदिर जितना आकर्षक और सुंदर है, उतना ही आकर्षक पूरा क्षेत्र भी है. यह पूरा परिसर श्वेत रंग से रंगा हुआ है, विघ्नहर्ता भगवान गणेश, द्वारिकाधीश, भगवान दत्तात्रेय, रघुनाथजी, बटुक भैरव, काल भैरव और नंदीजी सहित सिद्धनाथ महादेवजी की मनभावन मंदिर है. खोखरा हनुमान मंदिर में सुबह 4 बजे से ही पूजा-अर्चना शुरू हो जाती है. मंदिर में आने वाले लाखों भक्तों को शांति की अनुभूति होती है. कईयों की मन्नतें पूरी होने से मंदिर में हर साल लाखों की संख्या में भक्त दर्द तथा कष्ट से पीड़ित होकर आते हैं और दर्शन के बाद आनंद की अनुभूति करते हैं. कुल मिलाकर यह मंदिर सभी के लिए संकटमोचन का केन्द्र बना हुआ है.

आंध्रप्रदेश का वीरभद्र मंदिर

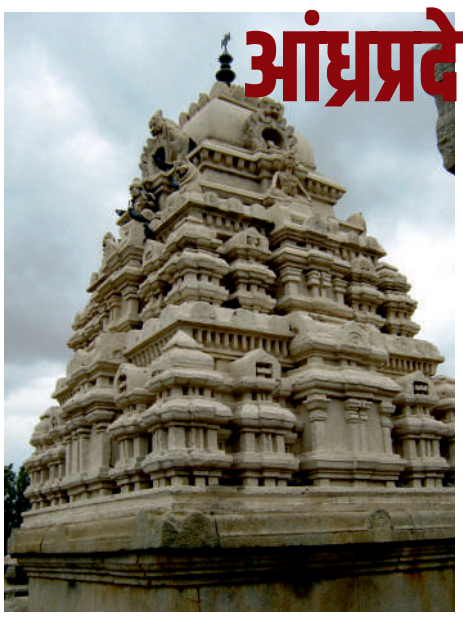

वीरभद्र मंदिर भारत के आंध्र प्रदेश के लेपाक्षी में स्थित है. यह मंदिर भगवान शिव के उग्र अवतार वीरभद्र को समर्पित है. सोलहवीं शताब्दी में निर्मित मंदिर की वास्तु शिल्प विशेष रूप से विजयनगर शैली में है. जिसमें मंदिर की लगभग हर उजागर सतह पर प्रचुर मात्रा में नक्काशी और पें टिंग है. यह राष्ट्रीय महत्व के केन्द्रीय संरक्षित स्मारकों में से एक है. इससे सबसे शानदार विजयनगर मंदिरों में से एक माना जाता है. दीवार चित्र विशेष रूप से बहुत चमकीले परिधानों और रंगों में रामायण, महाभारत और पुराणों की महाकाव्य कहानियों से राम और कृष्ण के दृष्य के साथ विस्तृत है और वे अच्छी तरह से संरक्षित हैं. मंदिर से लगभग 200 मीटर 660 फिट दूर शिव की एक बहुत बड़ी सवारी नंदी है. जिसे पत्थर के एक ही खंड से बनाया गया है. इसे दुनिया में अपने प्रकार के सबसे बड़े में से एक माना जाता है. यह मंदिर कई कन्नड शिला लेखों का घर है. क्यों कि यह कर्नाटक सीमा के करीब स्थित है.

जागृत और आदर्श है वरूडा का बालाजी मंदिर

जिंदा समाधि ली थी हरीप्रसाद ब्रह्मचारी महाराज ने

बडनेरा से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थिति वरूड़ा का श्री बालाजी संस्थान लाखों भक्तों का आस्थास्थल बना हुआ है. इस मंदिर में श्री बालाजी के रूप में श्रीरामजी का मंदिर है. श्री.गुरूवर्य बाबा हरिप्रसाद ब्रह्मचारी महाराज जाने-माने तपस्वी संत थे. महाराज यहां पर तपस्या कर रहे थे. उन्होंने धीरे-धीरे वरूड़ा में श्री बालाजी मंदिर की स्थापना 100-125 साल पहले की. इसी तरह उन्होंने श्री भोलेबाबा मंदिर का भी यहां पर निर्माण किया गया. इसी तरह गायत्री मूर्ति की स्थापना भी इस पवित्र क्षेत्र में की गई. वहां पर श्रीराम नवमी उत्सव, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी,शिवरात्रि का उत्सव बड़े पैमाने पर मनाया जाता है. परम तपस्वी गुरूवर्य बाबा हरिप्रसाद ब्रह्मचारी महाराज ने होली के दिन यहां पर जिंदा समाधि ली थी. इस उपलक्ष्य में होली से पंचमी तक पांच दिन विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन हर साल यहां पर होता है. इसमें हजारों की संख्या में भक्त शामिल होते हैं. पंचमी के दिन यहां पर भव्य महाप्रसाद कार्यक्रम होता है.

आदर्श युवा पीढ़ी का निर्माण ही मेरा उद्देश्य

राज्यभर में108 भागवत कथाएं करने वाले चंद्रकुमार जाजोदिया का प्रतिपादन

किसी भी देश की प्रगति उसकी आदर्श संस्कृति, संस्कारों से होती है. युवाओं को व्यसन मुक्त करने के साथ ही आदर्श युवा पीढ़ी का निर्माण देश की जरूरत है. इसके मद्देनजर प्रयास शुरू है. राज्यभर में 108 श्रीमद् भागवत कथाएं जारी हैं. प्रभुश्री राम जहां मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, वहीं उन्होंने जीवन भर हर रिश्ते को त्याग और समर्पण के साथ निभाया. हम सभी के लिए यह अत्याधिक आनंद का विषय है कि अयोध्या में लंबे इंतजार के बाद प्रभु श्रीरामचंद्र के भव्य मंदिर का निर्माण और इसमें श्रीरामलला मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम हो रहा है. पूरे देश में जिस तरह का माहौल श्रीराममय हो गया है, वह देश की एकता और भाईचारे के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण है.भारत की वर्तमान में देश को स्वर्णिम इतिहास देने की क्षमता रखने वाली युवा पीढ़ी आज कुछ मात्रा में व्यसनों के अधीन होती जा रही है.युवा पीढ़ी को आदर्श आचार-विचार और संस्कारों के साथ देश का जिम्मेदार नागरिक बन कर राष्ट्र की सेवा करनी होगी.आदर्श युवा पीढ़ी के निर्माण के लिए राज्य भर में 108 भागवत कथाओं के माध्यम से प्रयास किया जा रहा है. इस आशय का प्रतिपादन राष्ट्रीय स्तर के समाजसेवी और सामाजिक तथा धार्मिक कार्यक्रमों में सदैव अग्रणी रहने वाले चंद्रकुमार उर्फ लकी भैया जाजोदिया ने किया.अमरावती में संपन्न शिव महापुराण के बाद 18 से 22 जनवरी तक देश में आयोजित राम उत्सव के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय स्तर पर धर्म और संस्कारों को बढ़ावा देने वाले विदर्भ स्वाभिमान द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले विशेषांक को साक्षात्कार में लप्पी भैया जाजोदिया ने बताया कि युवा पीढ़ी को आदर्श नागरिक बनाने के नेक उद्देश्य से राज्यभर में 108 भागवत कथाओं का संकल्प उन्होंने लिया है.जहां भी कथाएं हो रही हैं. लोगों का जबरदस्त प्रतिशत और सराहना मिल रही है.अमरावती में हुई रिकॉर्ड तोड़ शिव महापुराण कथा के परदे के पीछे के नायक चंद्रकुमार जाजोदिया के मुताबिक वर्तमान युवा पीढ़ी काफी शार्प है.बड़ी संख्या में युवक भटक गए हैं. व्यसनों के अधीन हो गए हैं. युवाओं को पटरी पर लाने के लिए उनके द्वारा राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की. भावना से राज्य भर में 108 भागवत कथाओं का आयोजन किया गया है. विभिन्न शहरों में और जिलों में यह भागवत कथाएं हो.अयोध्या में प्रभु श्रीराम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा को हर भारतीय के लिए गर्व बताने वाले चंद्र कुमार जाजोदिया ने कहा कि प्रजातंत्र के सही मायने में नायक प्रभुश्री राम ही हैं. उन्होंने आदर्श राजा के साथ आदर्श पुत्र और सभी रिश्तों को त्याग और समर्पण के साथ निभाया है, यही कारण है कि आज सभी लोग रामराज्य की कल्पना करते हैं.अयोध्या के कार्यक्रम के साथी जिस तरह संदेश भर के मंदिरों को सजाया जा रहा है और दीपावली जैसा मनाने का कार्यक्रम तय किया जा रहा है. राष्ट्र की एकता के लिए इस तरह की स्थिति अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है.चंद्रकुमार जाजोदिया ने समस्त भारतवासियों को इस स्वर्णिम पर्व की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं दी और सभी को अपने जीवन में प्रभु श्रीराम के आदर्श आचरण का पालन करते हुए परिवार समाज तथा राष्ट्र के लिए अपना योगदान देने का आग्रह किया.राज्यभर में उनके द्वारा आयोजित की जा रही श्रीमद् भागवत कथाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति आदर्श संस्कार एवं राष्ट्र धर्म को बढ़ावा देने की पहल की सभी द्वारा सराहना की जा रही है.

बडनेरा का झिरी राम मंदिर है भक्तों का आस्था स्थल

100 साल का है गौरवशाली इतिहास,चंदूलाल सिंघानिया है मंदिर के कर्ताधर्ता

यवतमाल रोड बडनेरा झिरी स्थित श्रीराम मंदिर जहां लाखों भक्तों का आस्थास्थल है, वहीं दूसरी ओर मंदिर में बालाजी हनुमान जी की आकर्षक मूर्ति भक्तों को आकर्षित करती है.वही इस मंदिर में आने वाले भक्तों की संख्या लगातार बढ़ रही. हैमंदिर के कर्ताधर्ता चंदूलाल रामेश्वर जी सिंघानिया हैं.समाजसेवी तथा व्यवसायी चंदूलाल सिंघानिया स्वयं प्रभु श्री राम एवं हनुमान जी के भक्त . की समस्त व्यवस्था बेहतरीन ढंग से निभा रहे हैं, वही मंदिर ट्रस्ट के जुड़े बेटे पवन के साथ के सभी पदाधिकारी और स्वयंसेवक मंदिर की व्यवस्था में अपना महत्तम योगदान दे रहे हैं.विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए चंदूलाल सिंघानिया ने बताया कि 1977 में इस मंदिर में श्रीराम दरबार की प्राण प्रतिष्ठा की गई

थी. उनके मुताबिक इसके पहले भी इस मंदिर में भक्तों का आना-जाना शुरू था और विरासत में उन्हें प्रभु की भक्ति और मंदिर के निर्माण का सौभाग्य प्राप्त हुआ.11 जून 1963 को चंदूलाल सिंघानिया का जन्म हुआ.उन्हें दो पिता का आशीर्वाद मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. उनके जन्म देने वाला पिता भले ही राम अवतार शिवप्रसादजी सिंघानिया रहे हो लेकिन उन्हें रामेश्वरजी गोपीनाथजी सिंघानिया ने दत्तक लेकर पुत्रवत प्रेम दिया. इस मंदिर में साल भर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है. रामनवमी, हनुमान जयंती, कोजागिरी , श्रावण महोत्सव के साथ ही कार्यक्रम शुरू रहते हैं.राम कथा पठन और 1000 से अधिक भक्तों को तुलसी के पौधे प्रदान किया. अयोध्या में श्री राम ललाकी प्राण प्रतिष्ठा को विश्व में रहने वाले भारतीयों के लिए गौरवमई बताते हुए वह कहते हैं कि ५५० सौ साल की लंबी प्रतीक्षा के बाद हिंदुओं के आराध्य प्रभु श्रीराम लला की मूर्ति की स्थापना हर भारतीय के लिए गर्व का विषय होना चाहिए. अकोट के सोनाला से संबंध रखने वाले चंदूलाल सिंघानिया के मुताबिक पिता रामेश्वर सिंघानिया प्रभु श्रीराम एवं हनुमानजी के अनन्य भक्त थे.वे बताते हैं कि स्वर्गवास के पूर्व उन्हें प्रभु श्री राम के दर्शन का सौभाग्य मिला.कोमा में रहने के बाद भी प्रभु के साक्षात्कार की जानकारी उन्होंने अंतिम सांस लेने से कुछ मिनट पहले परिवार को दी थी.श्रीराम मंदिर के लिए कारसेवा में शहीद होने वाले सभी भक्तों को नमन करते हुए उन्होंने भक्तों को इस गौरवशाली पल की शुभ काम नाएं दी 14 फरवरी को श्याम बाबा मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी. चंदूलाल सिंघानिया ने बताया कि श्री राम के साथ 10 से 12 एकड़ क्षेत्र में पहले मंदिर परिसर में श्री श्याम बाबा के मंदिर का निर्माण तेजी से किया जा रहा है.मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम 14 फरवरी को आयोजित किया गया है. ५ दिवसीय इस आयोजन में हवन,के साथ अन्य कई धार्मिक कार्यक्रम भी होंगे.श्याम बाबा की मूर्ति जयपुर से आ रही है.संस्थान में 13 लोगों की बॉडी द्वारा प्रभु की सेवा की जा रही है. पवन सिंघानिया के साथ युवाओं की टीम मंदिर के बेहतरीन प्रबंधन के साथ अन्य जिम्मेदारी बखूबी निभा रही है.

हर भारतीय के मन में है प्रभु श्रीराम

पूर्व विधायक ज्ञानेश्वर धाने पाटिल का प्रतिपादन

प्रभु श्रीराम हर भारतीय के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम,आदर्श राजा आदर्श पुत्र और सभी भूमिकाओं में सदैव आदर्श रहे हैं.अयोध्या में श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा समूचे राष्ट्र के लिए अभियान की बात है.वह सभी के थे और सभी उनके हैं.प्रभु श्री राम के आदर्श आचरण का पालन करना आज के दौर में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है.अगर हम ऐसा कर पाते हैं तो यह हमारे लिए परम सौभाग्य की बात होगी.श्री राम के आदर्श विचार ही आदर्श राजा के रूप में उनके कार्य ही भारत की गरिमा को बढ़ाने का काम करेंगे.इस आशा का मत समाज सेवी और स्वयं भक्ति भाव में विश्वास रखने वाले ज्ञानेश्वर धाने पाटिल ने किया.उन्होंने इस पवित्र मौके पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कामना की की प्रभु श्री रामचंद्र के राज्य में सभी नागरिक खुशहाल थे,फिर से एक बार वही आदर्श राम राज्य भारत में आए और हर भारतीय खुश रहे और अपने जीवन मेंवह सभी सुविधाएं प्राप्त करें,जिसका वह हकदार है.

जन-जन के मन में है राम,समूचे देश के लिए गौरवशाली क्षण

प्रभु श्रीराम की मूर्ति की अयोध्या में स्थापना किसी जाति धर्म अथवा पंथ की बजाय समूचे भारतीयों के लिए गौरव का क्षण है.आदर्श राजा के रूप में प्रभु श्रीराम ने जिस तरह से राज्य किया और जनता को जिस तरह से पुत्रवत माना और उसके लिए कुछ भी करने से कभी परहेज नहीं किया,उनकी इन्हीं खूबियों के कारण आज पूरे विश्व में रामराज्य की कल्पना की जाती है. प्रभु श्री राम के आदर्श आचरण से न केवल व्यक्ति बल्कि परिवार,समाज गौरव को प्राप्त करता है. महिलाओं की सुरक्षा और न्याय को उन्होंने सदैव महत्व दिया. शबरी के झूठे बेर खाकर जहां उन्होंने समाजवाद और सभी बराबर का संदेश दिया, वहीं मां अहिल्या का कल्याण भी किया. इस आशय का मत जानी-मानी समाज सेविका एड. नमिता तिवारी ने किया.

विदर्भ स्वाभिमान द्वारा प्रकाशित श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा विशेषांक को अपनी शुभकामनाएं देते हुए नामित तिवारी ने इस पहल की सराहना की. उनके मुताबिक आज युवा पीढ़ी को सही दिशा देने की जरूरत है विदर्भ स्वाभिमान द्वारा सामाजिक और धार्मिक के साथ राष्ट्रीय गौरव के क्षणों को प्रचारित करने का प्रयास सराहनीय है. प्रभु श्री राम का आदर्श अगर हर व्यक्ति अपने जीवन में अपना ले तो समूचा भारत विश्व में सबसे शक्तिशाली और गौरवशाली बनने से कोई भी नहीं रोक सकता है. आज पूरे भारत में दीपावली के जैसा माहौल है और हर भारतीय स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है. प्रभु श्रीराम का गुणगान करने के साथी उन्हें हर रिश्ते में आदर्श बताते हुए कहा कि जनता के लिए जितना बड़ा त्याग प्रभु श्रीराम ने किया उतना बड़ा त्याग पूरे विश्व में किसी राजा द्वारा करने का इतिहास नहीं है.उन्होंने इस मौके पर समस्त देशवासियों से दीपोत्सव मानने और हर घर, हर मंदिर और हर पवित्र स्थल को सजाने तथा उत्साह व्यक्त करने का आग्रह किया. इसके साथ ही जीवन में प्रभु श्रीराम के आदर्श को अपनाते हुए अपना जीवन सफल करने के साथ राष्ट्र धर्म को महत्व देते हुए देश की तरक्की के लिए सभी से योगदान देने का भी अनुरोध किया. ब्राह्मण समाज में सक्रिय नमिता तिवारी ने सभी देशवासियों को इस मंगलमय ऐतिहासिक क्षण की शुभकामनाएं भी दी.

प्रजातंत्र के सच्चे महानायक हैं प्रभु श्रीराम

समाजसेवी अरूण पडोले का प्रतिपादन,

मर्यादा पुरूषोत्तम प्रभु श्रीराम को जिस भी दृष्टिकोण से देखा जाए, उस दृष्टीकोण में वे महान हैं. उनकी हर खूबी मानवता के कल्याण को प्रोत्साहित करने वाली है. हम सभी भारतीयों के लिए यह गौरव का पल है. श्रीराम न केवल मानव उत्थान, बल्कि माता-पिता और गुरू के आदर्श को महत्वपूर्ण मानते हुए उनकी महत्ता की पराकाष्ठा हैं. प्रभु श्रीराम जहां जनता के महानायक राजा हुए हैं, वहीं आज भी रामराज्य की कल्पना ही उन्हें सामने रखकर की जाती है. प्रभु श्रीराम प्रजातंत्र के महानायक रहे हैं. उनकी राज्य नीति का अनुकरण करने पर कोई भी राष्ट्र महान बन सकता है. इस आशय का मत शिंदे गुट शिवसेना के जिला प्रमुख अरूण पडोले ने व्यक्त किया. समस्त भारतवासियों को अयोध्या में श्रीरामलला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा पर शुभकामनाएं देते हुए देश में दीपोत्सव मनाने, हर घर, मंदिर, सार्वजनिक स्थान पर रोशनाई करते हुए इसे महापर्व के रूप में मनाने का आग्रह किया. उनके मुताबिक जिस तरह का माहौल वर्तमान में पूरे देश में देखा जा रहा है, इसका इंतजार लोग वर्षों से कर रहे हैं. स्वयं मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने इस उपलक्ष्य में अयोध्या में पहुंचकर श्रीराम लला के दर्शन के साथ ही विगत कुछ महीने पहले आरती में सहभागी होकर लाभ उठाया था.

प्रभु श्री रामकी मूर्ति की अयोध्या में स्थापना किसी जाति, धर्म अथवा पंथ की बजाय समूचे भारतीयों के लिए गौरव की बात है. आदर्श राजा के रूप में प्रभु श्री राम ने जिस तरह से राज्य किया और जनता को जिस तरह से पुत्रवत माना और उसके लिए कुछ भी करने से कभी परहेज नहीं किया, उनकी इन्हीं खूबियों के कारण आज पूरे विश्व में रामराज्य की कल्पना की जाती है. प्रभु श्री राम के आदर्श आचरण से न केवल व्यक्ति बल्कि परिवार,समाज और गौरव में इतिहास हासिल करने की क्षमता रखता है. आदर्श राजा के साथ ही सुग्रीव और केवट के मामले में वे किस तरह आदर्श मित्र रहे, रावण को हराने के बाद भी प्रभु श्रीराम में सोने की लंका पर कब्जे की भावना उनका सर्वो च्च त्याग ही कहा जाना चाहिए. विभीषण को राज्य सौं प दिया.

विदर्भ स्वाभिमान द्वारा प्रकाशित किए जा रहे श्रीराम लाल प्राण प्रतिष्ठा विशेषांक को अपनी शुभकामनाएं देते हुए सामाजिक कामों में भी स्वयं को झों कने वाले एड. अरूण पडोले ने कहा कि श्रीराम का आदर्श सदा-सर्वदा विश्व को मार्गदर्शन करता रहेगा. आज युवा पीढ़ी को सही दिशा देने की जरूरत है. उनके मुताबिक प्रभु श्रीराम का आदर्श अगर हर व्यक्ति अपने जीवन में अपना ले तो समूचा भारत विश्व में सबसे शक्तिशाली और गौरवशाली बनने से कोई भी नहीं रोक सकता है. अमरावती तो धार्मिक नगरी है. प्रभु श्रीराम की दादी इंदुमती जिले के कौं डण्यपुर में रहती थी. ऐसे में पूरा जिला ही आदर्श आचार-विचार और धर्म को महत्व देता है. आज पूरे भारत में दीपावली के जैसा माहौल है और हर भारतीय स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है. प्रभु श्रीराम संयुक्त परिवार और आदर्श परिवार के नायक हैं. पिता के वचन के खातिर कोई अपराध नहीं रहने के बाद भी उन्हों ने 14 साल का वनपास स्वीकार किया. साथ ही यह विश्व को संदेश दिया कि सगे रिश्तों की अहमियत क्या होती है. आदर्श भाई, आदर्श पुत्र के साथ ही आदर्श राजा के माध्यम से उन्हों ने समूचे विश्व को संदेश दिया कि राजा कैसा होना चाहिए.

अमरावती के श्रीराम

सभी छायाचित्र- पुखराज राजपुरोहित, अमरावती, मो. 9028123251

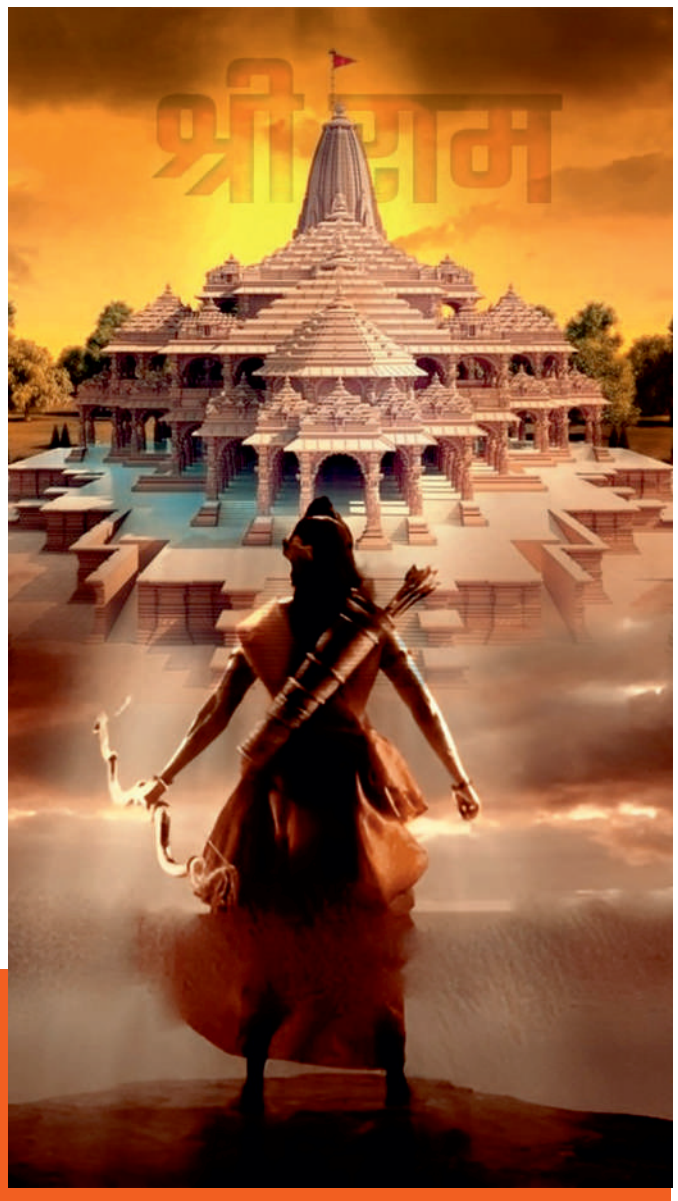

राजपुरोहित डिजिटल फोटो स्टूडियो की शानदार सौगात

बच्चों को श्री राम सीता बना कर लाये और मुफ्त फोटो पाएंअयोध्या में22 जनवरी को प्रभु श्री राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर जहां पूरे विश्व में उत्साह है,राष्ट्रीय स्तर के फोटोग्राफर पुखराज राजपुरोहित ने इस दिन बच्चों को शानदार सौगात दी है.इस दिन माता-पिता द्वाराअपने बच्चों को सीता और राम के रूप मैं सजा कर लाने पर उनका निशुल्क फोटो निकाल कर माता-पिता को दिया जाएगा.बच्चों के मन में प्रभु श्री राम के आदर्श को स्थापित करने के लिए स्टूडियो द्वारा की गई पहल की सर्वत्र सराहना की जा रही है.पुखराज ने बताया कि समूचे देश में प्रभु श्री राम को लेकर अपार उत्साह है,यह पल सभी के जीवन में यादगार बने और बच्चों के लिए भी यह यादगार बनाने के लिए यह पहल की है.उन्होंने भक्तों से इसका लाभ लेने का आग्रह किया है.कृष्णर्पण कॉलोनी स्थित फोटो स्टूडियो में फोटोग्राफी की . राजपुरोहित स्टूडियो, जो की कृष्णा अर्पण कॉलोनी, बियानी कॉलेज के पास, अमरावती में स्थित है.

भक्तों का मन मोह रहा है श्री नर्मदेश्वर शिव मंदिर

स्थानीय वल्लभनगर मेंनवनिर्मित श्री नर्मदेश्वर शिव मंदिर भक्तों का मनमोहन रहा है.मंदिर में हाल ही में भोलेनाथ की प्राण प्रतिष्ठा की गई.इस उपलक्ष में आयोजित महायज्ञ कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भक्तों ने जहां पुण्य लाभ प्राप्त किया ,वहीं दूसरी ओर महाप्रसाद का भी सैकड़ो भक्तों ने लाभ उठाया.यह मंदिर भले ही छोटा है लेकिन श्री नर्मदेश्वर भोलेनाथ की मूर्ति और के ठीक सामने भोलेनाथ के परम सेवक नंदी भी आने वाले भक्तों को आशीर्वाद देते प्रतीत होते है.इस मंदिर में भगवान भोलेनाथ की सेवा के लिए सेवक दिलीप मकवाने,अनिल चांदेकर,नंदकिशोर पेटकर, महेंद्र बोपुलकर के साथ ही क्षेत्र के सभी भोलेनाथ भक्त सेवा देने के लिए तत्पर हैं.भोलेनाथ की सजावट से लेकर रात की आरती तक बेहतरीन होती है और इसमें बड़ी संख्या में भक्त शामिल होते हैं.22 जनवरी को मंदिर मेंश्री राम लला विशेषांक के विमोचन के साथ अन्य विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है.भक्तों से इसका लाभ लेने का आग्रह किया गया है.

प्रभु श्रीराम का आदर्श देता है खुशी डॉ. पंकज घुंडियाल का प्रतिपादन

प्रभु श्री राम किसी जाति धर्म या पंथ के नहीं थे बल्कि मानव जाति के नायक थे.उन्होंने पूरा जीवन मर्यादा और आदर्श व्यवहार में बिता दिया.आदर्श पुत्र,आदर्श पिता और आदर्श राजा के रूप में उन्होंने जो कार्य किया,उसके कारण ही उनका समूचे विश्व में सम्मान है.साडे 500 साल केलंबे इंतजार के बाद अयोध्या में जिस तरह से श्री राम मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हो रही है. उसके कारण आज न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में जहां भी भारतीय रहते हैं.अपार खुशी का नजारा है. प्रभु श्रीराम ने जीवन में सदैव मर्यादाओं का पालन किया.आज उनके विचारों पर चलने की जरूरत है.प्रभु श्री राम किसी जाति और धर्म के नहीं रहते हुए समूची मानव जाति के लिए आदर्श हैं.इस मौके पर आज पूरे देश में रामोत्सव में दीपोत्सव का नजारा दिखाई दे रहा है.प्रभु श्री राम की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर समस्त भारतीयों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. प्रभु श्री राम के आदर्श को लेकर अगर हम सभीअपने जीवन को संवारने का प्रयास करें तोघर परिवार के साथ ही समाज और राष्ट्र की उन्नति से कोई भी इनकार नहीं कर सकता.प्रभु के आचरण का सभी पालन करें तो निश्चित तौर पर पूरे विश्व में शांति और सद्भावना के साथ सभी के जीवन में खुशियां रहेगी.

जागृत है बडनेरा का मारोती शंकर संस्थान मंदिर

वंदनीय बाबा भगवान बालगीर महाराज के पावन चरणों से पुनीत और तपस्थली बने

बडनेरा का मारुति शंकर संस्थान भक्तों की तमाम अभिलाषाओं को पूरा करने वाले जागृत मंदिर हैं. यहां 50 साल से गणेशजी की स्थापना और पूजा अर्चना के साथ साल भर जहां विभिन्न कार्यक्रम होते हैं वहीं दूसरी ओर भव्य पैमाने पर काकड़ आरती,राम कथा तथा भागवत कथा का भी आयोजन चलता रहता है.श्री राम मंदिर,शिव मंदिर तथा संकट मोचन हनुमान जी की मूर्ति भक्तों की तमाम मनोकामनाओं को पूरी करती है.शंकर जी के मंदिर में सावन महीने में लगातार अभिषेक कार्यक्रम होता है.पूर्व सांसद अनंतराव गुढ़े ने मंदिर में भव्य सभागृह का निर्माण करवाया.इसके अलावा शंकर मंदिर नदियाना एवं अग्रवाल बंधुओ ने पूरा करने में योगदान दिया.शंकर मंदिर के हॉल का निर्माण ओस्तवाल परिवार ने तथा मंदिर में श्री राम दरबार में आनंद परिवार का महत्वपूर्ण सहयोग रहा. ओम प्रकाश शर्मा एवं राजेन्द्र जाधव द्वारा मंदिर की सेवा में सराहनीय तत्परता दिखाई जाती है. वंदनीय बाबा बालगिर भगवान महाराज प्रभु के अनन्य भक्त थे.आज यह मंदिर जहां है वहां पहले छोटा सा झरना बहता था. मंदिर में सज्जनगढ के गद्रे स्वामी ने भी सेवा दी है. जागृत मंदिर के रूप में क्षेत्र में विख्यात है और इसका इतिहास उतना ही बेहतरीन और चमत्कारी है. मंदिर के सभी ट्रस्टी समर्पण भाव से प्रभु की सेवा करते है. हजारों की संख्या में भक्तगण इसका लाभ लेते हैं.

(मंदिरका इतिहास अगले अंक में...)

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम इनकी उज्वल विचारधारा जन जन तक पहुँचाने वाले समस्त आदरणीय, पूज्यनीय कथाकार इन्हें साधुवाद एव वन्दन.

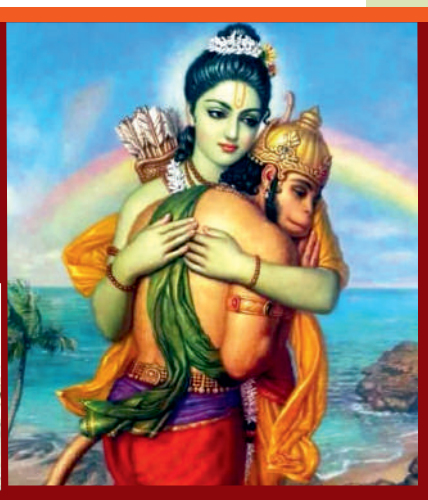

कलमकार, गीतकार,समस्त मीडिया, रामलीलासमूह के लोक कलाकार चित्रपट एव धारावाहिक निर्माता इन्हें हार्दिक धन्यवाद एव अभिनन्दन।

आनंद परिवार

कारसेवकों के बलिदान को मिला सम्मान, गौरव का पल

पूर्व मंत्री जगदीश गुप्ता ने कहा

विदर्भ स्वाभिमान/ श्वेता दुबे

अमरावती - अयोध्या में श्रीराम का साकार हो हुआ भव्य मंदिर हजारों कारसेवकों के बलिदान से प्राप्त हुआ स्वर्णिम क्षण है. यह भारतीय गौरव और अभिमान का भी प्रतीक है. इस पल का देशवासी कई शतकों से इंतजार कर रहे थे. आखिर हिन्दू भाईयों की आस्था की जीत हुई और अयोध्या में प्रभु श्रीराम लला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को भव्य-दिव्य समारोह के साथ होने जा रही है. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्य योगीनाथ के कठिन प्रयासों और जिद के कारण ही यह भव्य मंदिर साकार हो रहा है. यह मंदिर पूरे विश्व में भारत के गौरव को बढ़ाएगा. इस आशय का स्पष्ट मत भाजपा नेता और पूर्व मंत्री जगदीश गुप्ता ने व्यक्त किया. उनके मुताबिक वर्षों से जिसका इंतजार था, वह होने के बाद उसकी खुशी अमरावती सहित न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में देखी जा रही है.यह खुशी केवल भारत तक सीमित नहीं है. बल्कि समूचा विश्व आज इस खुशी में शामिल हो रहा है. जहां-जहां भी हिन्दू हैं, वहां यह खुशी मनाई जा रही है. मारिशस में तो इस भारतीय खुशी के मौके पर 22 जनवरी को अवकाश की घोषणा की गई है. हर मंदिर सजाया जा रहा है, लोगों में अपार उत्साह है, हर शहर स्वच्छता के साथ खुशी से

ओतप्रोत है. यह प्रभु श्रीराम की कृपा नहीं तो और क्या है. उनके मुताबिक हर भारतीय के लिए यह गौरव का क्षण है और सभी इसका आनंद ले रहे हैं.देश में आज रामोत्सव के दौरान दीपोत्सव की खुशी का यह नजारा ही यह बताने के लिए काफी है कि श्रीराम लला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा ने किस तरह देश में एकता की लहर सी ला दी है. कुछ को छोड़ दिया जाए तो राष्ट्र के अभिमान और गौरव के साथ ही त्रिभुवन स्वामी प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर के माध्यम से पूरे विश्व में अपार उत्साह है. मंदिर के माध्यम से जिस तरह की एकता और राष्ट्रीय स्वाभिमान की लहर देखी जा रही है, किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए यही सबसे जरूरी चीज होती है. उन्होंने इस मंगलमय मौके पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी.मंदिर में दर्शन करने के लिए देशभर ही नहीं तो विश्वभर से हर लाखों पर्यटक आने से उत्तर प्रदेश के साथ ही देश के आर्थिक विकास में भी तेजी से बढ़ावा होगा. आस्था के साथ ही आर्थिक मोर्चे पर भी यह मंदिर शानदार भूमिका निभाने वाला है.

प्रभु श्रीराम हैं युवाओं के आदर्श

युवा समाजसेवी अभिषेक पंजापी का प्रतिपादन

प्रभु श्रीराम किसी जाति धर्म या पंथ के नहीं थे बल्कि मानव जाति के नायक थे.उन्होंने पूरा जीवन मर्यादा और आदर्श व्यवहार में बिता दिया.आदर्श पुत्र,आदर्श पिता और आदर्श राजा के रूप में उन्होंने जो कार्य किया, वह पूरे विश्व के लिए उदाहरण बन गया. भारतीय युवाओं के लिए प्रभु श्रीराम आदर्श है.वर्तमान युवा पीढ़ी अगर प्रभु श्री राम के आदर्श आचरण का पूरी तरह से पालन करें तो हर घर स्वर्ग बन जाए और महान भारत राष्ट्र पूरे विश्व में सबसे आगे निकल जाए.यह मत शिव स्पोर्टस के संचालक और सामाजिक कामों में सदैव अग्रणी रहने वाले युवा समाजसेवी अभिषेक पंजापी ने कियाप्रभु श्रीराम आदर्श राजा और आदर्श पत्र थे.उन्होंने जीवन भर सत्य आचरण और परिवार की मर्यादा के साथ ही कभी भी किसी भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया. इसी कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए.समूचा विश्व प्रभु को पूजता है. समूचे विश्व में प्रभु को पूजा जाता है.आदर्श भाई का उदाहरण राम से बड़ा कोई नहीं हो सकता है.पिता के वचन को निभाने के लिए प्रभु श्रीराम 14 साल तक वनवास चले गए.माता-पिता और भाई का प्रेम किस तरह से परिवार को संवारता है, इसका आदर्श उदाहरण प्रभु श्रीराम ने समस्त संसार के सामने रखा.550 साल के लंबे इंतजार के बाद अयोध्या में जिस तरह से श्रीराम लला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हो रही है. उसके कारण आज न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में जहां भी भारतीय रहते हैं.अपार खुशी का नजारा है. प्रभु श्रीराम ने जीवन में सदैव मर्यादाओं का पालन किया.आज उनके विचारों पर चलने की जरूरत है.प्रभु श्रीराम किसी जाति और धर्म के नहीं रहते हुए समूचे मानव जाति के लिए आदर्श हैं. इस मौके पर आज पूरे देश में रामोत्सव में दीपोत्सव का नजारा दिखाई दे रहा है.प्रभु श्रीरामलला की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर समस्त भारतीयों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं दी.

प्रभु श्रीराम का आदर्श देता है

संतोष बजरंग चांडक का प्रतिपादन

प्रभु श्रीराम का आदर्श हर व्यक्ति के जीवन में खुशियां प्रगति और तरक्की का मार्ग प्रशस्त करता है. जहां वे आदर्श राजा के रूप में पूरे विश्व में सम्मानित हैं, वहीं आज भी राम राज्य की कल्पना समूचे विश्व करता है.श्री राम आदर्श राजा,संयुक्त परिवार को प्रोत्साहित करने वाले पुत्र के साथ सभी भूमिकाओं में उन्होंने आदर्श सिख समूचे विश्व को दी.यह मत समाज सेवी और राजापेठ श्री राम मंदिर में पिता स्वर्गीय श्रीरंग चांडक के आदर्श विचारों पर चलने वाले बजरंग चांडक ने व्यक्त किया. उनके मुताबिक अयोध्या में श्रीराम लला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हर भारतीय के लिए गर्व की बात है.इसकी खुशी न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में इस तरह का अपार उत्साह छाया हुआ हैवह अपने आप में हर भारतीय के लिए अभिमान से काम नहीं है.हम सभी भारतीय भाग्यशाली हैं,जहां साक्षात प्रभु ने अवतार लिया.रोटरी के साथ ही कई संगठनों के माध्यम से समाज सेवा में भी अग्रणी रहने वाले बजरंग चांडक का कहना है कि प्रभु श्रीराम के आदर्श आचरण को जीवन में उतारने से कई समस्याओं का खुद ही निपटारा हो जाता है.उन्होंने सभी देशवासियों को इस मंगल प्रसंग पर हार्दिक शुभकामनाएं दी.साथ ही कामना की कि राम राज्य की स्थापना के साथ देश का हर व्यक्ति सुख समृद्धि और स्वास्थ्य के साथ जीवन बिता और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे.

त्रेतायुग के दाशरथी राम

- प्रा. मंगला जोशी
त्र्यंबकाश्रम,श्री अंबादेवी मार्ग,अमरावती.

आज के संदर्भ में शतकों के संघर्ष के बाद, संयमशील ,सातत्यपूर्ण प्रयत्नों की झड़ी के परिणाम स्वरूप आज एक ऐतिहासिक आनंद क्षण हमारे राष्ट्रीय जीवन में आया है. अमृत मंथन की कथा, वह कंटकाकीर्ण मार्ग, संकटों की बौछार, उसमें फल प्राप्ती तक किए अथक, अविरत, अखंड, प्रयत्न. अंत में अमृत प्राप्ती. मानो इन सबका प्रतिबिंब जैसा यह फलोदय.राष्ट्र की अस्मिता को पुनर्जीवित करने वाला यह अमृत कुंभ ही है. अभी तक चार कुंभ मेले हुआ करते थे. आज दिनांक 22 जनवरी 2024 को (पौष शुक्ल द्वादशी अमृत सिद्धि योग) पांचवें कुंभ मेले का पांचवां ऐतिहासिक स्थान निर्माण हो रहा है. दाशरथी रामचंद्र हमारे भारतवर्ष का परमोउज्वल, अभिमानास्पद गौरवशाली इतिहास हैं. राष्ट्र की चेतना जगानेवाले चैतन्य हैं. सबको एक सूत्र में पिरोने वाले कुशल राष्ट्र संगठक हैं. हमारे भारतवर्ष के आदर्श राष्ट्र पुरुष हैं.भिल्लिन शबरी के बेर आनंद से खाने वाले राम मात्र शब्दों से नहीं तो अपनी कृति से हमें समरसता का पाठ पढ़ाते हैं. जटायु जैसे पक्षीराज का स्नेह जिन्हें प्राप्त हुआ उस जटायु का स्नेहयुक्त दूर निरीक्षण सहायक लेने वाले रामभद्र हमें पर्यावरण स्नेह सिखाते हैं। सेतुबंध के समय मार्ग न देने वाले महासागर को हटाने के लिए बाण उठाने वाले रघुनाथ अपने विरोध में हमारे सामने कितनी भी महाशक्ति क्यों ना हो, उससे भी लोहा लेने की धैर्यशील वीरता सिखाते हैं। वानरों की सहायता से त्रिभुवन नेता, अतुल पराक्रमी किंतु सारी दुनिया में दहशत निर्माण करने वाले रावण को परास्त करने वाले रघुवीर क्रियासिद्धि सत्वे भवंति महता नोपकरणे।'हमारे साध्य कार्य के प्रति हमारी लगन ही हमें उपलब्ध साधनों के साथ हमें यश मिला देती है. साधनों की कमी कोई बाधा नहीं रह जाती, इसका पाठ सिखाती है. काल त्रेतायुग हो या आज की 21वीं सदी या आने वाले भविष्य काल क्या रामचंद्रजी कि यह समरसता, पर्यावरण स्नेह, धैर्यशीलता, अतुल साहस,ध्येय के प्रति अधिक लगन जनता की रक्षा का व्रत अनुकरणीय नहीं? कालातीत नहीं ? इसी राम का ऐसा ही राम राज्य स्वतंत्र भारत में लाने की महात्मा गांधी जी की आकांक्षा थी, आदर्श राष्ट्र पुरुष रामचंद्रजी के गुण हमारे जीवन में उतरे यह परमेश्वर चरणों में प्रार्थना.

मानव हितकारी है प्रभु श्रीराम का आदर्श, देता है खुशी

समाजसेवी पूरणसेठ हबलानी का प्रतिपादन

प्रभु श्री राम किसी जाति धर्म या पंथ के नहीं थे बल्कि मानव जाति के नायक थे. उन्होंने पूरा जीवन मर्यादा और आदर्श व्यवहार में बिता दिया.आदर्श पुत्र,आदर्श पिताऔर आदर्श राजा के रूप में उन्होंने जो कार्य किया,उसके कारण ही उनका समूचे विश्व में सम्मान है. साढ़े 500 साल के लंबे इंतजार के बाद अयोध्या में जिस तरह से श्रीराम लला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हो रही है. उसके कारण आज न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में जहां भी भारतीय रहते हैं.अपार खुशी का नजारा है. प्रभु श्रीराम ने जीवन में सदैव मर्यादाओं का पालन किया. आज उनके विचारों पर चलने की जरूरत है.प्रभु श्रीराम किसी जाति और धर्म के नहीं रहते हुए समूची मानव जाति के लिए आदर्श हैं. इस मौके पर आज पूरे देश में रामोत्सव में दीपोत्सव का नजारा दिखाई दे रहा है.प्रभु श्रीरामलला की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर समस्त भारतीयों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. हम सभी सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें यह सुनहरा और परम सौभाग्यशाली पल मिल रहा है.

Amravati Municipal Corporation, Amravati.

Sanitation Department
No-AMC/SD/SWMTEN/1613/2023
Date : -03/01/2024

E-TENDER NOTICE

Request for proposal for Selection of Contractor for "Operation Anul Mantenance of Aspirational Toilets Constructed At BADNERA ROAD NEAR SAI NAGAR UNDER S.B.M.-2.0 (u) Within the amravati Municipal Corporation Area. Amravati Maharashtra.

Amravati Municipal Corporation (AMC) is committed to improve its Solid Waster Management Funcitions fowards Compliance of Aspirational Toilets as per Operational guidelines for SBM-2.0 (Urban) of MoH& UA. Gol.

To implement the above program, AMC invites E-tenders. The tender docuents can be downloaded from the website (http://www.mahatenders.gov.in) Only those agencies / contractors/bidders, interested in bidding. Shall pay the tender document cost online.

Event	Date	Time	Web-Link/Venue
Start of Bid Download	16/01/2024	16.00 pm	www.mahatenders.gov.in
End Date of Online and Physical Bid Submission	23/01/2024	16.00 pm	Online Submission (Technical & Finanacial Bid) www.mahatenders.gov.in physical Submission (Technical Bid only) Deputy Commissioner (Admin) Amravati Municipal Corporation, Amravati Dist.-Amravati. Maharashtra
Technical Bid Opening	24/01/2024	16.00 pm	In the office of Deputy Commissioner (Admin) Amravati Municipal Corporation, Amravati. Dist. - Amravati Maharashtra
Financial Bid Opening	To be Announced	To be Announced	In the office of Deputy Commissioner (Admin) Amravati Municipal Corporation, Amravati. Dist. - Amravati Maharashtra

Note : All Eligible/intersted agencies/contractors are mandated to get enrolled on the e-Procurement portal (http://www.mahatenders.gov.in) and the tender can be download throught- portal (http://www.mahatenders.gov.in) in order to download the tender documents and participate in the subsequent bidding process.

Deputy Commissioner (Admin), Amravati Municipal Corporation, Amravati reserves the right to accept or reject all the tenders without assigning any reason.

Deputy Commissioner (Admin)
Amravati Municipal Corporation

भव्य श्रीराम मंदिर खींचेगा पूरे विश्व का ध्यान

विशेष प्रतिनिधि/ विदर्भ स्वाभिमान

प्रभु श्रीराम का अयोध्या में साकार होने वाला मंदिर भव्य, दिव्य और विश्वस्तरीय होगा. इस मंदिर से जहां धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, वहीं दूसरी ओर इस मंदिर से फैजाबाद जिले के विकास को पंख लगें गे. प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए ही जिस तरह से लोगों की बुकिंग हो रही हैं, अयोध्या के सभी होटल बुक हो रहे हैं, हर व्यवसायी खुश है, उससे आगामी दिनों में यह मंदिर किस तरह प्रदेश और देश की आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान करेगा, इसका सहजता से अंदाज लगाया जा सकता है. आस्था के साथ ही विकास के सारथी के रूप में अयोध्या का श्रीराम मंदिर इतिहास रचने वाला है. लाखों की संख्या में भाविक यहां दर्शन करने के लिए आएंगे. इसका पूरा श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय मंत्री अमित शाह के साथ ही उत्तर प्रदेश के डैशिंग और राष्ट्र धर्म को सर्वोच्च मानने वाले मुख्यमंत्री आदित्य योगीनाथ को जाता है. श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ने बताई राम मंदिर की मुख्य विशेषताएं लोगों का ध्यान खींचने वाली हैं. राम मंदिर को अब बस फाइनल टच दिया जाना बाकी है. इस बीच श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ने मंदिर की विशेषताएं बताई है. गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के पवित्र कार्यक्रम को पूरा करेंगे. परंपरागत नागर शैली में तैयार किये गए मंदिर की सुन्दरता देखने योग्य है. मंदिर अनगिनत खूबियों से युक्त रहने के साथ ही अयोध्या नगरी को विश्वस्तर पर पहुंचाने की क्षमता रखता है. यहां उमड़ने वाले लाखों भक्तों के स्वागत के लिए अयोध्या नगरी तैयार हो चुकी है. 25 हजार लोग होंगे शामिलअयोध्या नगरी में बने राम मंदिर का उद्घाटन 22 जनवरी 2024 को किया जायेगा. इसमें देशभर के संत-महंत, आचार्य, जानी मानी हस्तियों के साथ हजारों लोग शामिल हों गे.इस अवसर पर पीएम मोदी मुख्य यजमान होंगे. इस उद्घाटन समारोह में 25,000 से अधिक लोग शामिल हो रहे है. वहीं राम मंदिर ट्रस्ट ने तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं को भी न्योता भेजा है. क्या है श्रीराम मंदिर की खूबियां1. राम मंदिर ट्रस्ट ने एक्स पर जानकारी दी है कि मंदिर परंपरागत नागर शैली में बनाया जा रहा है. मंदिर की लंबाई (पूर्व से पश्चिम) 380 फुट, चौड़ाई 250 फुट और ऊंचाई 161 फुट है वहीं 3 मंजिला मंदिर में प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई 20 फुट जहां कुल 392 खंभे और 44 द्वार बनाये गए है. 2. राम मंदिर ट्रस्ट के मुताबिक मुख्य गर्भगृह में प्रभु श्रीराम का बालरूप (श्रीरामलला सरकार का विग्रह) और प्रथम तल पर श्रीराम दरबार बनाया गया है. मंदिर में पूर्व दिशा से 32 सीढ़ियां चढ़कर सिंहद्वार से प्रवेश किया जा सकेगा. 3. मंदिर के 70 एकड़ क्षेत्र में से 70 प्रतिशत क्षेत्र हमेशा हरा-भरा रहेगा. वहीं मंदिर में लोहे का उपयोग नहीं किया गया है और न ही धरती के ऊपर कांक्रीट बिछाई गयी है. 4. मंदिर में 5 मंडप बनाये गए हैं. इसमें नृत्य मंडप,रंग मंडप,सभा मंडप,प्रार्थना मंडप,कीर्तन मंडप, मंदिर के खंभों व दीवारों में देवी देवता तथा देवांगनाओं की मूर्तियां उकेरी गयी है जो मंदिर की खूबसूरती को और बढ़ा देती है. दिव्यांगजन एवं वृद्धों के लिए मंदिर में रैम्प व लिफ्ट की व्यवस्था की गयी है.मंदिर के चारों ओर आयताकार परकोटा रहेगा. चारों दिशाओं में इसकी कुल लंबाई 732 मीटर तथा चौड़ाई 14 फीट है. परकोटा के चारों कोनों पर सूर्यदेव, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव को समर्पित चार मंदिरों का निर्माण किया जा रहा है. वहीं उत्तरी भुजा में मां अन्नपूर्णा, व दक्षिणी भुजा में हनुमान जी का मंदिर रहेगा.मंदिर के समीप पौराणिक काल का सीताकूप विद्यमान रहेगा. मंदिर परिसर में प्रस्तावित अन्य मंदिर- महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, निषादराज, माता शबरी व ऋषिपत्नी देवी अहिल्या को समर्पित होंगे.दक्षिण पश्चिमी भाग में नवरत्न कुबेर टीला पर भगवान शिव के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया है और वहां जटायु प्रतिमा की स्थापना की गई है.मंदिर के नीचे 14 मीटर मोटी रोलर कॉम्पेक्टेड कंक्रीट (डक्व) बिछाई गई है. इसे कृत्रिम चट्टान का रूप दिया गया है. मंदिर को धरती की नमी से बचाने के लिए 21 फीट ऊंची प्लिंथ ग्रेनाइट से बनाई गई है. मंदिर परिसर में स्वतंत्र रूप से सीवर ट्रीटमेंट प्लांट, वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट, अग्निशमन के लिए जल व्यवस्था तथा स्वतंत्र पॉवर स्टेशन का निर्माण किया गया है, ताकि बाहरी संसाधनों पर न्यूनतम निर्भरता रहे.25 हजार क्षमता वाले एक दर्शनार्थी सुविधा केंद्र का निर्माण किया जा रहा है, जहां दर्शनार्थियों का सामान रखने के लिए लॉकर व चिकित्सा की सुविधा रहेगी. मंदिर परिसर में स्नानागार, शौचालय, वॉश बेसिन, ओपन टैप्स आदि की सुविधा भी रहेगी. मंदिर का निर्माण पूर्णतया भारतीय परम्परानुसार व स्वदेशी तकनीक से किया जा रहा है. पर्यावरण-जल संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है.बाक्सतिमंजिला होगा भव्य मंदिर अयोध्या में निर्माणाधीन श्रीराम जन्मभूमि मंदिर तिमंजिला होगा. इसकी मजबूती के साथ ही इसकी खूबियों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है. मंदिर परम्परागत नागर शैली में बनाया जा रहा है.मंदिर की लंबाई (पूर्व से पश्चिम) 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट तथा ऊंचाई 161 फीट रहेगी. तिमंजिला मंदिर की ऊंचाई 60 फिट की होगी. हर मंजिल 20 फिट ऊंचाई का होगा. इसके साथ ही भक्तों की सभी जरूरी सुविधाएं भी मंदिर के आसपास की जाएंगी.हर दृष्टि से यह मंदिर मजबूत और खूबियों वाला होगा.

गौ माता सेवक हैं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

महाकाली शक्तिपीठ के पीठाधीश्वर शक्ति महाराज ने कहाअयोध्या के जिस प्रसंग के लिए हजारों कार सेवकों ने अपनी जान दी,आज लाखों राम भक्तों की कुर्बानियां और उनके प्रयासों के बाद प्रभु श्री राम के जन्म स्थान अयोध्या में उनका भव्य मंदिर साकार हुआ है.प्रभु श्रीराम गौ सेवक के साथ समस्त मानव जाति के आदर्श थे. समस्त हिंदुओं के लिए यह गर्व की बात है कि जिस पल का उन्होंने 500 साल तक इंतजार किया, आज अयोध्या में भव्य मंदिर और प्रभु श्रीरामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के साथ प्रभु श्रीराम को मानने वाले करोड़ों लोगों की मनोकामनाएं पूरी हो गई हैं. आज पूरा देश खुशी से झूम रहा है. मंदिर की स्थापना के साथ प्रभुश्री राम के आशिर्वाद से इस देश में राम राज्य आए और हर व्यक्ति का दुख,दरिद्रता और तमाम दुखों को प्रभु हर ले और सही मायने में भारत में राम राज्य की स्थापना हो,किस तरह की कामना हिंदुत्व के लिए और गौ सेवा तथा गौ माता की रक्षा के लिए सदैव प्रयास करने वाले महाकाली के अनन्य भक्त शक्ति महाराज ने किया. महाराज ने कहा कि जिस तरह से मंदिर और श्रीराम लला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हो रही है. इस तरह भारत सरकार को गौ माता को संरक्षित घोषित करते हुए गौमांस, गौमाता की तस्करी पर पाबंदी लगाते हुए गौ माता की सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए. पूज्य शक्ति महाराज के मुताबिक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी,केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्य योगी नाथ के प्रयासों से ही श्री राम मंदिर साकार हुआ है.इस विश्वव्यापी खुशी के मौके पर उन्होंने समस्त देशवासियों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं दी.

श्रीराम लला मुर्ति प्राणप्रतिष्ठा समारोह पर सभी को मंगल मय हार्दिक शुभकामनाएं!

विदर्भ स्वाभिमान, आनंद परिवार, जय मातादी मानस मंडल